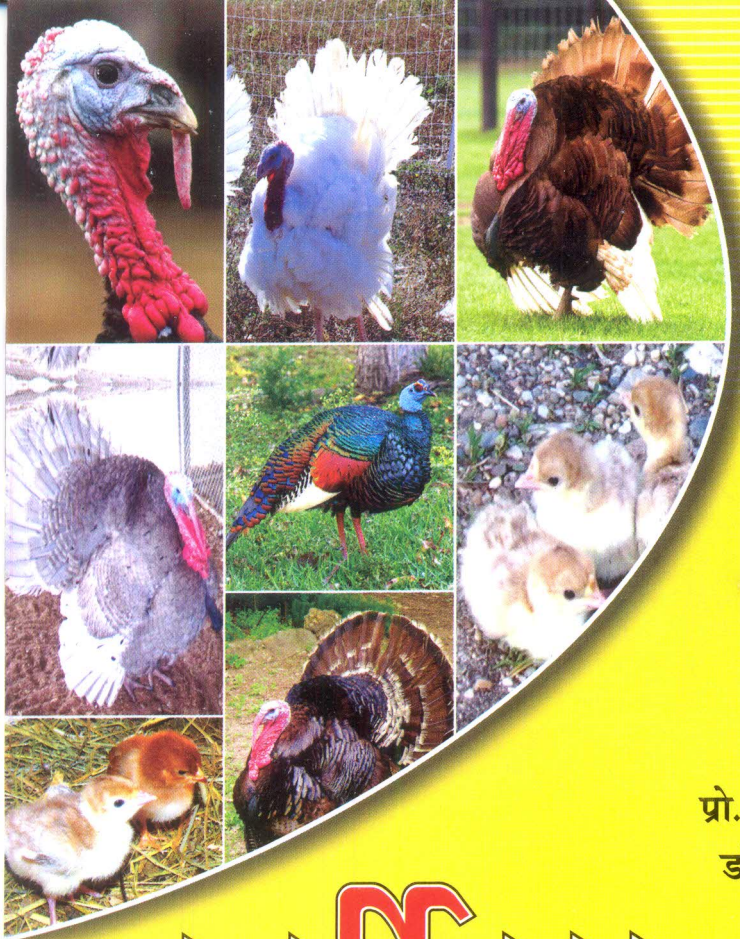

प्रकाशन : 5/2015

प्रो. (डॉ.) बसन्त बैस
डॉ. सी. एस. ढाका

टर्की पालन

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।

विविध पशुधन उत्पादक प्रणालियों को अपनाकर कृषि आय बढ़ाने के लिए प्रेरणा हेतु सजीव प्रदर्शन नमूनों की स्थापना

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

टर्की उत्तरी अमेरिका एवं यूरोप में जाना पहचाना पक्षी हैं। परन्तु विश्व के शेष हिस्सों में विशेष रूप से विकासशील देशों में व्यापारिक दृष्टि से अभी इसको स्थापित होना है। हमारे देश में इसके प्रचलित नहीं होने का संभावित कारण यह है कि हमारे यहाँ मुर्गी पालन ज्यादा प्रचलित है। परन्तु फिर भी विकासशील देशों में जिन स्थानों पर बिना चर्बी का माँस पंसद किया जाता है वहॉ इसके पालन की अच्छी संभावना है। यह पक्षी छोटे व सीमांत कृषकों की आजिविका के लिए उपयुक्त है। क्योंकि इसे कम लागत एवं प्रबंधन से आसानी से पाला जा सकता है। मुर्गियों से भिन्न यह पक्षी मॉस उत्पादन के लिए पाला जाता है।

टर्की की प्रजातियाँ:-

टर्की की विश्व में सात प्रजातियाँ पायी जाती है।

1. व्हाइट हॉलेंड
2. बाउर्बन रेड
3. नैरेगन्सेट
4. ब्लेक
5. स्लेट
6. ब्रोंज
7. बेल्टस्विले स्मॉल व्हाइट

हमारे देश में व्यवसायिक दृष्टि से तीन विदेशी प्रजातियाँ पायी जाती है।

1. ब्रॉड ब्रेस्टेड ब्रोंज
2. ब्रॉड ब्रेस्टेड लार्ज व्हाइट
3. बेल्टस्विले स्मॉल व्हाइट

हालांकि थोड़ी बहुत संख्या में टर्की की देशी नस्लें उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर एवं इलाहाबाद जिलों के आस पास एवं दक्षिण भारत के कुछ इलाकों में मिलती है।

आवास :-

टर्की का आवासीय स्थान ऊँचाई वाले स्थान पर जहाँ से पानी का निकास आसानी से हो सके। आवास स्थल हवादार होना चाहिये। टर्की को बाड़ों में अथवा डीप लीटर दोनो तरह के आवासों में पाला जा सकता है, डीप लिटर व्यवस्था में– प्रतिकूल वातावरण से बचाव, शिकारी जानवरों से बचाव, कम लागत, कम आवासीय भूमि आदि फायदे है। खुले बाड़ों में बाड़े के कुछ हिस्से में छप्पर लगाया जा सकता है, ताकि प्रतिकूल वातावरण से बचा जा सके। टर्की में वृद्धि दर अधिक होती है अतः ये तेजी से बड़ी होती है। अतः इनको एक साथ ज्यादा संख्या में नहीं रखनी चाहिये। डीप लिटर सिस्टम में पहले 3–4 सप्ताह में, प्रति टर्की बच्चे के लिए 1 वर्ग फीट प्रति टर्की जगह पर्याप्त है, उसके बाद 8 सप्ताह

तक 1.5 वर्ग फीट प्रति टर्की, 8–12 सप्ताह पर 2 वर्ग फीट प्रति टर्की, उसके बाद 16 सप्ताह की उम्र तक 2.5 वर्ग फीट प्रति टर्की जगह पर्याप्त है। 16 सप्ताह की उम्र के बाद प्रति टर्की 3.5 वर्ग फीट जगह की आवश्यकता होती है । खुले बाड़े में, डीप लिटर की तुलना में तीन गुणा फर्श तल की आवश्यकता होती है।

खान पान:-

टर्की को मुर्गी की तुलना में ज्यादा प्रोटीन, अमीनो एसिड, विटामिन्स , मिनरल की जरूरत होती है। मुर्गी को दिये जाने वाले भोजन के अतिरिक्त प्रोटीन स्त्रोत मिलाकर भी टर्की को भोजन दिया जा सकता है। इन्हे हरी घास काट कर भी खाने के साथ दी जा सकती है। पीने के पानी की उचित व्यवस्था 24 घण्टे उपलब्ध होनी चाहिये। हमेशा साफ पानी पीने के लिये देना चाहिये। मुर्गी पालन में काम आने वाले खाने पीने के उपकरणो को टर्की के लिये भी उपयोग किया जा सकता है आवश्यकता पड़नें पर इनमें कुछ बदलाव भी किया जा सकता है।

पोषण	उम्र (सप्ताह में)					
	0–4	4–8	8–12	12–16	16–20	20–24
मेटाबॉलाइजेबल ऊर्जा प्रति किलोकेलोरी प्रति किलोग्राम	2800	2900	3000	3100	3200	3300
प्रोटीन (प्रतिशत मे)	28	26	22	19	16.5	14
मेथिओनिन (प्रतिशत मे)	0.55	0.45	0.40	0.35	0.25	0.20
लाइसिन (प्रतिशत मे)	1.6	1.5	1.3	1.0	0.80	0.65

लिंग निर्धारण :-

टर्की के लिये लिंग निर्धारण आसान नहीं होता है फिर भी निम्न तरीके लिंग निर्धारण हेतू काम में लिये जा सकते है ।

1. अण्डे से बाहर निकलने पर चूजे में वेन्ट को देखकर।
2. नर, मादा की तुलना में वजन में कुछ ज्यादा होता है चोंच के आधार के पास जो स्नूड होता है वह नर में तुलनात्मक रूप से बड़ा, लचीला एवं गद्देदार होता है जबकि मादा में यह छोटा, पतला एवं लचीला होता हैं।

इन्कयूबेशन /अण्डे सेना :-

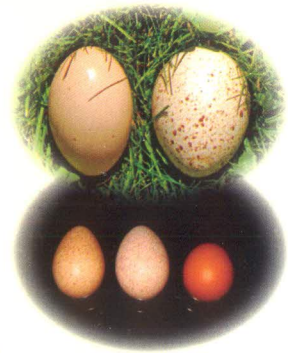

टर्की के लिए मुर्गी की तुलना में थोड़ा गरम वातावरण चाहिये। अण्डे सेने के लिये ब्रूडर्स काम में लिए जा सकते है। ब्रूडर के लिए प्रथम सप्ताह में तापमान 95° फारनेहाइट रखा जाता है, इनके बाद ब्रूडर का तापमान प्रति सप्ताह 5° फारनेहाइट तक कम किया जाता है जब तक कि यह 70° फारनेहाइट तक नहीं पहुँच जाये। उचित तापमान का पता इन चूजों को देखकर लगाया जा सकता है अर्थात तापमान पर चूजे उम्ब हवा से विचरण करते है।

प्रजनन संबधित विशेषतायें:-

अण्डे देने की उम्र	24-28 सप्ताह
अण्डों का उत्पादन प्रति वर्ष	70–100
अण्डों का वजन	85 ग्राम (लगभग)

बीमारियाँ एवं रोकथाम :-

टर्की पक्षियों में होने वाली अधिकतर बिमारियों के प्रति प्रतिरोधक होता है। हालांकि कभी कभी पानी नहीं पीने के कारण इनकी मृत्यु होने लगती है, इनमें रानीखेत एवं फाउल कोलेरा के लिए ही टीकाकरण किया जाता है।

मार्केटिगं:- भारत में अभी टर्की के लिए स्थापित बाजार नहीं है फिर भी इसे विकसित किया जा सकता है टर्की का औसत वजन 6–8 किग्रा होता है। 8 सप्ताह के पश्चात इसको बेचा जा सकता है।

-: तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभार :-

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत
कुलपति
राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

प्रो. बी. के. बेनीवाल
अधिष्ठाता
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय
बीकानेर

प्रो. एस. सी. गोस्वामी
विभागाध्यक्ष
पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन विभाग,
सी.वी.ए.एस., बीकानेर

-:: सम्पर्क सूत्र ::-

प्रो. बसंत बैस
डॉ. सी. एस. ढाका
9414328437
पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग
सी.वी.ए.एस., राजूवास, बीकानेर

Under CSA-RKVY-1(15) Project

Establishment of Live Demonstration Models of Diversified Livestock Production Systems For Motivating Adaption To Enhancing Agricultural Income

मुद्रक : डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, बीकानेर # 9784105819